विश्व न्याय मन्दिर

रिज़वान 2015

विश्व के बहाईयों को,

परम प्रिय मित्रगण,

रिज़वान का समुज्ज्वल समय आ गया है, और जिन ऊँचाइयों को सर्वमहान नाम के समुदाय ने प्राप्त कर लिया है वहाँ से क्षितिज पर एक उज्ज्वल भविष्य नज़र आता है। एक विशाल क्षेत्र पार कर लिया गया है: विकास के नये कार्यक्रम सामने आये हैं, और अगले बारह महीनों में, जबकि सैकड़ों अन्य कार्यक्रम अवश्य ही उभर कर सामने आएँगे, उन प्रत्येक क्लस्टर में गतिविधियों के आवश्यक प्रतिमान को तेज करने के प्रयास आरम्भ किये जा चुके हैं, जिनका आह्वान पाँच वर्षीय योजना के 5000 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये किया गया है। मौजूदा कार्यक्रम मजबूती पकड़ रहे हैं, अनेक अब यह साफ़ दिखला रहे हैं कि किसी क्लस्टर में, मुहल्ले के समुदाय में या फिर गाँव के सामाजिक परिदृश्य तक इसे ले जाना प्रभुधर्म के लिये क्या अर्थ रखता है। जो राहें बड़े पैमाने पर विस्तार और सुगठन की ओर ले जाती हैं उन राहों पर अड़िग कदमों से चला जा रहा है, साहसी युवा अक्सर गति प्रदान कर रहे हैं। अब वे राहें साफ़ नज़र आ रही हैं जिन पर चलकर भिन्न-भिन्न माहौल में प्रभुधर्म की समाज-निर्माण की ताकत लगायी जा सकती है और वे निर्धारक विशिष्टताएँ, जो किसी समुदायमूह की विकास-प्रक्रिया को और उजागर कर सकती हैं, धीरे- धीरे पहचानी जा सकती हैं।

इस काम को कार्यरूप देने और इसमें सहयोग प्रदान करने का आह्वान बहाउल्लाह के प्रत्येक अनुयायी को सम्बोधित है, और प्रत्येक वैसे दिल से जवाब आयेगा जिसे दुनिया की दयनीय अवस्था पर पीड़ा होती है, ऐसी चिन्ताजनक परिस्थितियाँ जिनसे निजात पाने में इतने सारे लोग असमर्थ हैं। क्योंकि अन्ततः, एक अव्यवस्थित समाज की बढ़ती हुई बीमारियों के लिये योजना के विस्तृत दायरे के ढाँचे में किये गये प्रणालीबद्ध, निर्धारित और निःस्वार्थ काम ही प्रत्येक चिन्तातुर अनुयायी का सर्वाधिक सकारात्मक प्रत्युत्तर है। पिछले साल के दौरान यह और भी स्पष्ट होता चला गया कि उन आदर्शों के प्रति सामाजिक सामंजस्य भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में अलग-अलग तरीकों से समाप्त होता चला गया, जो पारम्परिक ढंग से लोगों को एकता के सूत्र में पिरोते थे। नाना प्रकार की अनुदार, विषाक्त और अपने ही हितों को साधने वाली असहिष्णु विचारधाराएँ, जो असंतोष और विरोध को पोषित करती हैं, अब विश्वसनीय सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकतीं। युद्धग्रस्त विश्व प्रतिदिन अपने आप पर से भरोसा खोता जा रहा है, इन विनाशकारी मतों की वकालत करने वाले निडर और निर्लज्ज

बनते जा रहे हैं। यहाँ हम 'सर्वमहान लेखनी' के सुस्पष्ट मत को याद करते हैं: "वे नरकाग्नि की ओर दौड़ रहे हैं और इसे ही प्रकाश समझने की भूल कर रहे हैं।" उनके विस्तार को रोकने में राष्ट्रों के नेक नीयत वाले नेता और सदिच्छा रखने वाले लोग, जो समाज में व्याप्त दरारों को पाटने के लिये संघर्ष कर रहे हैं, शक्तिहीन हो रहे हैं। इन सब का प्रभाव केवल साफ़ दिखने वाले युद्ध के माहौल अथवा व्यवस्था के विध्वंस में ही नहीं देखा जा सकता, उस अविश्वास में भी देखा जा सकता है जो पड़ोसी को पड़ोसी के विरुद्ध खड़ा कर देता है, परिवार के ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर देता है, जो सामाजिक सम्वाद का प्रतिरोध करता नज़र आता है, जो उस लापरवाही में दिखता है जिसके साथ घृणित मानवीय उद्देश्य का उपयोग शक्ति पाने और धन इकट्ठा करने के लिये किया जाता है -- इन सब से यह साफ़ संकेत मिलता है कि नैतिक शक्ति, जो समाज को बनाये रखती है, वह गम्भीर रूप से समाप्त हो चुकी है।

फिर भी, इस बोध से आश्वासन मिलता है कि विघटन के बीच से एक नये प्रकार का सामुदायिक जीवन आकार ग्रहण कर रहा है जो मानवजाति में अन्तर्निहित सभी दिव्य गुणों को व्यावहारिक अभिव्यक्ति देता है। हमने देखा है कि वैसी जगहों में जहाँ शिक्षण और समुदाय-निर्माण से सम्बन्धित गतिविधियों की सघनता जारी रखी गई है वहाँ मित्रगण उन भौतिकवादी ताकतों से अपने को सुरक्षित रख पाये हैं, जिनसे उनकी बहुमूल्य ऊर्जा के क्षीण होने का खतरा है। इतना ही नहीं, बल्कि अन्य विविध मांगों के लिए समय का प्रबन्धन करने के दौरान वे कभी भी अपने पवित्र और आवश्यक दायित्वों को भूलते नहीं। प्रभुधर्म की आवश्यकताओं और मानवजाति के सर्वोत्तम हितों के लिये जागरूक रहने की जरुरत हर समुदाय में है। प्रभुधर्म के संदेश से अनजान किसी क्लस्टर में जैसे ही विकास का कोई कार्यक्रम स्थापित किया गया है वहाँ हम देखते हैं कि एक प्रतिबद्ध अनुयायी के दिल में व्याप्त बहाउल्लाह के प्रेम के कारण किस प्रकार शुरुआती गतिविधियों की हलचल तेज हो जाती है। विभिन्न जटिलताओं के बावजूद, जो समुदाय के आकार में विस्तार के साथ अन्ततः अवश्य ही समायोजित की जायेगी, सभी गतिविधियाँ प्रेम के इसी एक रेशे के साथ शुरू होती हैं। यह वह महत्वपूर्ण धागा है, जिससे एक चक्र के बाद दूसरे चक्र में, बच्चों, युवाओं और वयस्कों को आध्यात्मिक विचारों से परिचित कराने के लिये धीर-गम्भीर और केन्द्रीभूत प्रयास का ताना-बाना बुना जाता है; प्रार्थना और धर्मानुराग के लिये आयोजित बैठकों के माध्यम से भक्ति-भाव जगाया जाता है; ऐसे सम्वाद को प्रोत्साहित किया जाता है जिससे समझ बढ़ती है; आजीवन 'रचनात्मक वचनों' के अध्ययन और उनके अनुरूप कर्मों को ढालने के लिये एक सतत् विकासशील प्रक्रिया शुरू की जाती है; दूसरों के साथ मिलकर सेवा करने की क्षमता विकसित की जाती है; और जो कुछ भी सीखा गया उसे एक-दूसरे के साथ कदम-से-कदम मिला कर कार्य-रूप दिया जाता है। परम प्रिय मित्रगण, 'आभा सौन्दर्य' के प्रिय लोगों, जब कभी भी हम पवित्र देहरी पर उपस्थित होते

हैं तब हर एक अवसर पर अत्यन्त उत्साह के साथ आपके लिये हम प्रार्थना करते हैं कि 'उसके' (बहाउल्लाह के) लिये आपका प्यार 'उसके' धर्म के प्रति आपको जीवन समर्पित कर देने की शक्ति दे।

क्लस्टरों और उनमें सघन गतिविधियों के केन्द्रों, जहाँ बड़ी संख्या में लोगों ने सामुदायिक जीवन की ऊर्जा को ग्रहण किया है, से प्राप्त अन्तर्दृष्टियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। हमें यह देखकर संतोष होता है कि किस प्रकार ऐसे स्थानों में मैत्रीभाव और विनम्र सेवा पर आधारित परस्पर सहयोग की एक संस्कृति ने सहज अपने को स्थापित किया है, जिसने अधिक-से-अधिक लोगों को समुदाय की गतिविधियों के दायरे में एक प्रणालीबद्ध तरीके से ला दिया है। सच, एक नये समाज के लिये बहाउल्लाह की दृष्टि के प्रति इतनी बड़ी संख्या में लोगों का अलग-अलग स्थानों पर अभिगमन अब एक सम्मोहक सम्भावना नहीं, बल्कि एक उभरती हुई वास्तविकता है।

हम आप में से उन सब के लिये कुछ और बातें कहना चाहते हैं जिनके इर्द-गिर्द इच्छित विकास अभी होना बाकी है और जो बदलाव की इच्छा रखते हैं। आशा रखें। ऐसा सदा नहीं रहेगा। क्या हमारे धर्म का इतिहास अशुभ आरम्भ किन्तु चमत्कारिक परिणाम के विवरणों से नहीं भरा पड़ा है? कितनी बार ऐसा हुआ है कि जब दिव्य सहायता की शक्ति ने सम्पोषित किया है तब कुछ अनुयायियों, युवा हों अथवा वृद्ध, के कामों ने, या फिर किसी एक परिवार अथवा एक अकेले व्यक्ति ने दिखने वाले असत्कारशील क्षेत्र में जीवंत समुदायों के निर्माण में सफलता पाई है, यह नहीं सोचें कि आपकी स्थिति अन्तर्निहित रूप से इससे भिन्न है। किसी क्लस्टर में परिवर्तन, चाहे तेजी से हो अथवा अथक मेहनत के बाद आया हो, किसी निर्धारित फॉर्मूलाबद्ध तरीके से अथवा कभी-कभार होने वाली गतिविधियों से नहीं आता; यह कार्य, समीक्षा और परामर्श की लयबद्धता से आता है, और यह योजनाओं से प्रेरित होता है, जो अनुभव द्वारा बनाई जाती हैं। इसके परे, चाहे इसके तात्कालिक प्रभाव जो भी हों, 'प्रियतम' की सेवा अपने आप में आत्मा के लिये चिरस्थायी आनन्द का स्रोत होती है। उनके उदाहरण को भी याद करें जो प्रभुधर्म के पालने में आपके आध्यात्मिक सम्बन्धी हैं, किस प्रकार उनके रचनात्मक विचार, एक समुदाय के रूप में उनका उभर कर सामने आना और ईश्वरीय वचनों के प्रसार में उनकी दृढ़ता, विचार और कर्म के स्तर पर उनके समाज में परिवर्तन ला रही है। ईश्वर आपके साथ है, आप में से हर एक के साथ है। योजना के जो बारह महीने बचे हैं इस दौरान प्रत्येक समुदाय को उसकी वर्तमान स्थिति से आगे एक अधिक मजबूत स्थिति में ले जाएँ।

जिन प्रयासों को अन्य अनेक क्षेत्रों में करने का आह्‌वान बहाई जगत को किया जा रहा है उनके लिये विस्तार और सुगठन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य एक ठोस आधार तैयार करता है। बहाई विश्व केन्द्र में उन हज़ारों पातियों के विषयों को सुव्यवस्थित ढंग से सूचीबद्ध कर उनकी एक अनुक्रमणिका (इनडेक्स) तैयार करने के प्रयास तेज किये जा रहे हैं, विशाल मूल्यवान धरोहर, हमारे

धर्म के पावन लेखों का संग्रह है, जिसे सम्पूर्ण मानवजाति की भलाई के लिये सम्हाल कर रखा गया है; जिससे कि पावन लेखों के विपुल भण्डार को मूल भाषाओं में तथा अंग्रेजी अनुवाद के प्रकाशन को भी तेज किया जा सके। आठ मशरिकुल-अज़कार, ईश्वर की महिमा के गुणगान के लिये पावन मंदिरों के निर्माण के प्रयास भी तेज किये जा रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर प्रभुधर्म के बाह्य मामलों के काम का प्रभाव भी स्पष्टतया बढ़ा है और अधिक सुव्यवस्थित रूप से किया जा रहा है, जिसे और भी अधिक प्रेरणा राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को कोई छः महीने पहले भेजे गये एक प्रलेख से मिली। यह प्रलेख पिछले दो दशकों के विचारणीय अनुभवों पर आधारित है और भविष्य में इन प्रयासों को विकसित करने के लिये एक विस्तृत ढाँचा देता है। इस बीच न्यूयॉर्क और जेनेवा तथा ब्रसेल्स स्थित बहाई अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के कार्यालयों के सहयोगी के रूप में अदिस अबाबा और जकार्ता में दो नये कार्यालय खोले गये हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रभुधर्म के संदर्भ के लिये व्यापक अवसर प्रदान करेंगे। बहुधा विकास की माँगों से प्रोत्साहित होकर अनेक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाएँ अपनी प्रशासनिक क्षमता बढ़ा रही हैं, जो उपलब्ध संसाधनों के अंदर उनकी विवेकपूर्ण प्रबन्धन-क्षमता में देखी जा सकती है, उनके अपने समुदायों की परिस्थितियों को नज़दीक से जानने के उनके प्रयासों में देखी जा सकती है और इस बात के लिये, उनकी सतर्कता में देखी जा सकती है कि उनके राष्ट्रीय कार्यालयों के काम-काज और चुस्त-दुरूस्त बनते जाएँ; इस क्षेत्र में संकलित जानकारियों के आधार पर काम-काज को और भी सुव्यवस्थित करने की जरुरत को देखते हुए विश्व केन्द्र में प्रशासनिक प्रणाली विकास कार्यालय बनाया गया है। नाना प्रकार के सामाजिक सरोकारों के लिये पहल में बढ़ोतरी अनेक देशों में जारी है, जिससे हम बहुत हद तक सीख पाएँगे कि किस प्रकार प्रभुधर्म की शिक्षाओं में अन्तर्निहित विवेक को सामाजिक और आर्थिक हालात को सुधारने में उपयोग में लाया जा सकता है; यह क्षेत्र इतना आशाजनक है कि हमने एक सात सदस्यीय सलाहकार मण्डल की स्थापना सामाजिक और आर्थिक विकास कार्यालय के निमित्त किया है, जो उस कार्यालय के विकास का अगला चरण है। इस मण्डल के तीन सदस्य उस कार्यालय के संयोजन समूह के सदस्य के रूप में काम करेंगे और वे पवित्र भूमि में निवास करेंगे।

इस प्रकार, इस रिज़वान के अवसर पर, हम देखते हैं कि बहुत कुछ करना बाकी है, वहीं हम यह भी देखते हैं कि बहुत सारे लोग करने के लिये तैयार हैं। हज़ारों समुदाय-समूह, मुहल्ले के क्षेत्रों और गाँवों में आस्था और आश्वासन के निर्मल सोते फूट पड़े हैं और उनके उत्साह को बढ़ा रहे हैं, जो नवजीवन देने वाले इसके जल का रसास्वादन कर चुके हैं। कुछ जगहों में इसका बहाव एक समान है, कुछ स्थानों में यह नदी बन चुका है। किसी भी व्यक्ति के लिये यह समय किनारे ठहर ठिठकने का नहीं है, इसके प्रवाह की दिशा में सब को चल पड़ना है।

-विश्व न्याय मंदिर